

Vol-09, Issue-7, January-June 2019

ISSN No : 2278-0408

World Translation

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal



Editor in Chief
Prof. Ashok Singh

Dr Surendra pandey
(Editor)

Dr vikash kumar
(Editor)

8.	माया महात्मिनी हम जानी डॉ० आराधना मिश्रा	42-45
9.	'पत जी का मौलिक आध्यात्मिक चिंतन' डॉ० विपुला सिंह	46-48
10.	आचार्य नरेन्द्रदेव के विचारों के वाहक मार्कण्डेय डॉ० अरुण कुमार मिश्र	49-55
11.	प्रवासी हिन्दी साहित्यकार और उनका साहित्य डॉ. अफरोज बेगम	56-60
12.	Financing Risk of Real Estate Enterprises and Its Prevention and Control Measures DR.BACHHA KUMAR RAJAK	61-69
13.	अश्वेत नारीवाद और बेल हुक्स रजनी कुमारी पाण्डेय	70-73
14.	समकालीन हिन्दी साहित्य में सामाजिक चिंतन का स्वरूप विश्लेषण और उपन्यासों की भूमिका डॉ० वर्षा रानी	74-84
15.	मानवाधिकार के मुकुर में मृच्छकटिक डॉ० गंगेश 'गुंजन'	85-90

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार और उनका साहित्य

डॉ. अफरोज बेगम

‘प्रवासी’ शब्द उन लोगों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपने देश को छोड़कर दूसरे देशों में जाकर बस गये हैं। भारतीय प्रवासी लेखिका उषा राजे सक्सेना प्रवासी शब्द पर विचार करते हुए लिखती हैं कि प्रवासी एक मनोविज्ञान है एक अन्तर्दृष्टि है जिसे फारम्यूलेट होने में बरसों बरस लगते हैं। आजादी के पहले अंग्रेज भारत से गरीब और सस्ते मजदूरों को अपने साथ लेते गये। ये मजदूर अधिकांशतः पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार और दक्षिण भारत के तमिल थे। गिरमिटिया प्रथा समाप्त होने के बाद भी ये भारतीय वापस अपने वतन नहीं लौटे और वहीं रहने लगे और इन्हीं लोगों को प्रवासी भारतीय कहा गया और इन्हीं की आगे की पीढ़ी को भारतवर्सी नाम से पुकारा जाने लगा।

आज प्रवासी साहित्य की चर्चा जोरों पर है। और प्रवासी साहित्य लेखन कार्य भी तेजी से हो रहा है। ये प्रवासी हिन्दी साहित्यकार भारतीय संस्कृति, परम्परा, हिन्दी भाषा को एक वैश्विक ऊँचाई प्रदान करने में सहयोग दे रहे हैं। ये भारतीय प्रवासी साहित्यकार दुनिया कोने कोने फैले हुए हैं, किन्तु साहित्य या लेखनी के माध्यम से अपनी नयी पहचान बनाने की लगातार कोशिश करते नजर आते हैं। वर्तमान में ये भारतीय प्रवासी साहित्यकार आधुनिक भारतीय समाज के हिस्से हैं और ये लोग अपने नये व्यक्तित्व की खोज में विदेशों में जाकर बस गये हैं। वहाँ जाकर एक नयी संस्कृति, नयी भाषा के बीच जीवन यापन कर रहे हैं, किन्तु उन लोगों पर अस्मिता का प्रश्न चिन्ह भी बराबर बना रहता है। इसी अस्मिता के कारण ही उनके कथा साहित्य तथा कविताओं में वनवास की यातनाएँ दिखाई पड़ती हैं। उनकी रचनाओं में जीवन ‘तन के तौ सुख सौ सुविधा में मेरा मन वनवास दिया’ के स्वर की गूँज सुनायी पड़ती है।

वैश्विक स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। भारतीय हिन्दी भाषी प्रवासी जहाँ भी जाते हैं, वही अपनी संस्कृति और हिन्दी भाषा का परचम लहराते हैं। प्रवासी हिन्दी साहित्यकार जो लगातार लेखन कार्य कर रहे हैं, उनके नाम हैं—सुषम वेदी, उषा राजे सक्सेना, उषा प्रियंवदा, तेजेन्द्र शर्मा, पुष्पिता अवस्थी, कमलेश्वर, हिमांशु जोशी, लक्ष्मी घर मालवीय, पूर्णिमा बर्मन, प्राण शर्मा, राजश्री, राकेश त्यागी, श्याम नारायण शुक्ल, सुरेश चन्द्र शुक्ल, शरद आलोक, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, सुमन कुमार घई, सुरेश राय, उषा देवी, विजय कोल्हटकर, कादम्बरी मेहरा, पुष्पा भार्गव, वेद प्रकाश बटुक, सुदर्शन, प्रियदर्शनी इत्यादि।

भारतीय प्रवासी लेखिका सुषम वेदी हिन्दी समकालीन कथा साहित्य में एक प्रतिष्ठित नाम है। सुषम वेदी की रचनाओं में भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक आन्दोलन का चित्र उकेरा गया है। सुषम वेदी की रचनाएँ—हवन, लौटना, नवभूम की रसकथा, गाथा अमरबेल की, कतरा दर कतरा, मैंने नाता तोड़ा (उपन्यास) तथा चिड़िया और चील कहानी—संग्रह है। लेखकीय कर्म के बारे में सुषम वेदी लिखती हैं— ‘जब लिखती हूँ तो वह

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सगर (म.प्र.)